REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 8 | MAY - 2024

समकालीन कविता की भावधारा में प्रेम और स्त्री देह

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)

समकालीन कविता में प्रेम और स्त्री देह के प्रति कवि का आक्रोश अभिव्यक्त हुआ है। जहाँ प्रेम की परिभाषा बदली है वहीं देह का आकर्षण बढ़ा है। देह का आकर्षण बाजार उत्पन्न करता है। वैश्वीकरण के दौर में माल की खपत की होड़ लगी हुई है। उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिए स्त्री देह का भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। यहीं से कवि का चिन्तन जागृत होता है। कवियों ने विज्ञापन करने वाली स्त्रियों के हितों की चिन्ता की है, साथ ही ब्रांड के भँवर में फसे उपभोक्ताओं को आड़े हाथ लिया है। आलोच्य युग में सौन्दर्य के स्थान पर अव्यक्त भावनाओं को तरजीह दी गई है। कवियों ने युवा प्रेम के साथ ही विधवा माँ, बहन, बेटी और विवाहेत्तर संबंधों पर भी अपना पक्ष रखा है। उन्होंने एकांगी होने के स्थान पर न्यायोचित मार्ग अपनाने पर जोर दिया है।

कविता की भावधरा में प्रत्येक युग के स्त्री जीवन को रेखांकित किया गया है। सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रत्येक पहलू पर दृष्टिपात करते हुए कवियों ने युगीन जीवन के आलोक में स्त्री जीवन की आकांक्षा, आवश्यक्ता, आदर – आत्मसम्मान और उपेक्षा पर कविता के माध्यम से अपने भावाभिव्यक्त किये हैं । समय – समय पर न सिर्फ भूमिकाओं में परिवर्तन हुआ है बल्कि पूरक भी सिद्व हुए हैं। यद्यपि यह स्वीकार करना होगा कि युग की शासन पद्वति और सामाजिक व्यवस्थाएँ स्त्री जीवन पर हावी रही हैं । स्वतन्त्रता पश्चात स्त्री जीवन में आमूल चुल परिवर्तन हुआ। संवैधानिक संरक्षण उपरांत स्त्री जीवन मुखर हुआ है। समकालीन कविता में भी स्त्री जीवन की पुकार सुनाई देती है। प्रायः सभी कवियों ने स्त्री जीवन के विविध पक्षों को कविता के माध्यम उभारनें का प्रयत्न किया है। समकालीन कवियों ने प्राचीन समय में होने वाले लैंगिक भेदभाव पर छाती पीटने की अपेक्षा उनके जीवन की प्रमुख समस्याओं को उभारने में अधिक रूचि दिखाई है। समस्याओं के साथ दबे स्वर में कुछ समाधान भी प्रस्तुत करते दिखाई दते है। किन्तु कहीं न कहीं उनकी विवशता नजर आती है। फिर भी वैश्वीकरण के दौर में कामकाजी स्त्री, प्रेम सम्बन्ध, यौन भावना, विज्ञापन में स्त्री, उपेक्षित नारी इत्यादि स्वरूप की बुलन्द आवाज प्रस्तुत करती है। भारत में नवें दशक के प्रारम्भ में उदारीकरण की शुरुआत हुई तत्पश्चात सामाजिक परिवेश में आमूल चुल परिवर्तन हुआ। स्त्रियों के लिये संवैधानिक संरक्षण के साथ स्वयंसेवी एवं महिला संगठनो ने आवाज बुलन्द की। रूढ़ भारतीय समाज का चीजों को देखने का नजरिआ भी बदला। इस बदलाव का स्त्री हित में जमकर प्रयोग हुआ। यद्यपि यह स्वीकार्य तथ्य है कि स्त्री का सहकर्मिणी रूप प्राचीन समय से ही देखने को मिलता है किन्तु उसके अपने दायरे थे। अब उन दायरों में दरारे दभरने लगी और इक्कीसवी सदी का स्वागत सभी क्षेत्रों में समान अवसर उपलब्धता के साथ किया। स्त्री संघर्ष और अधिकार प्राप्ति की राह में कवि भी सहयोगी बने। उन्होंने प्रेम, सौन्दर्य, काम और देह को नवीन अर्थवत्ता प्रदान की। प्रेम सम्बन्धों का जिक्र आते ही मध्यकालीन बन्धन सामने आते हैं। वर्तमान में भी प्रेम सम्बन्धों का दायरा बना हुआ

है। इस दौर में पवन करण मुखर होकर अपनी कविता आपत्तियों के बीच प्रेम में हामी भरते हैं । हम तो प्रमी हैं, और प्रेम से इस्तिफा नहीं दिया जा सकता हमें इन आपत्तियों के बीच ही प्रेम करना है इन आपत्तियों के बीच ही चुनना है हमें अपने लिए एकांत इन आपत्तिश्यों को दर किनार करते हुए पीनी है किसी होटल के बाहर बिछी बछी बेंच पर बैठ कर चाय इन आपत्तियों की आँखों में धूल झोंक कर चुमना है एक–दसू रे को।

निश्चित ही प्रेम के प्रति समाज के नजरिए में बदलाव आया है। माता – पिता अब प्रेम विषयक परम्परागत अवधारणाओं के हिमायती नहीं रहे परन्तु कहना समीचीन होगा कि भारतीय सामाजिक ताने बाने में स्वीकृत प्रेम सम्बन्ध ही स्वीकार्य हैं। माता–पिता का प्रेम के प्रति नजरिया पवन करण की कविता एक खूबसूरत बेटी का पिता में नजर आती है– मैं जानता हूँ कि वह लड़की है तो किसी से प्यार भी करेगी, चाहेगी भी किसी को काई पसंद भी आएगा उसे और मैं भी नहीं चाहता मेरी बेटी किसी से प्रेम नहीं करे. ...

दरअसल मैं चाहता हूँ कि मेरी बेटी काँपते और डरते हुए नही, इस डगर पर संभलकर चलते हुए करे प्रेम

प्रेम के साथ स्त्री देह पर कवियों ने खुलकर लिखा है। यह युग वैश्वीकरण या बाजारवाद की तपिश में श्वास ले रहा है। वैश्वीकरण के दौर में स्त्री की परम्परागत छवी टूट चुकी है। आज स्त्री देह को बाजार की मांग के अनुरूप ढ़ाल दिया गया है।

प्रेम के साथ स्त्री देह पर कवियों ने खुलकर लिखा है। यह युग वैश्वीकरण या बाजारवाद की तपिश में श्वासे ले रहा है। वैश्वीकरण के दौर में स्त्री की परम्परागत छवि टूट चुकी है। आज स्त्री देह को बाजार की मांग के अनुरुप ढाल दिया गया है। प्रेम के साथ कवि स्त्री देह से भी जुड़ा है। स्त्री देह का आकर्षण किसी के लिए काल्पनिक और रंगीन दुनिया है। परन्तु किसी के लिए वह पेट भरने का जरिआ है। बाजारवाद और विज्ञापन की बाजीगरी ने स्त्री देह को व्यापार का जरिआ बना दिया। अपनी बेबसी के कारण भावनाएँ और लज्जा को दरकिनार करके उसने वेश्या बनना स्वीकार कर लिया।

समकालीन स्त्री जीवन के सन्दर्भ में एक वेश्या की मजबूरी को लीलाधर जगूड़ी एक गरीब वेश्या की मौत कविता में इस प्रकार व्यक्त किया है–दूसरे के काम बनाने के काम में जितनी बार भी गिरी खड़ी हो जा पड़ी किसी दूसरे के लिए अपना आराम कभी नहीं किया अपने शरीर में दाम भी जो आया कई हिस्सों में बँटा। समकालीन कविता में कवि पवन करण ने सामान्यतः नैतिक दायरों में बन्धे प्रेम सम्बन्धों को भी सामने लाकर चुप्पी तोडने की कोशिश की है। यद्यपि भारतीय समाज इन संबंधों को सहज स्वीकार नहीं करता है, किन्तु उनके संकलन स्त्री मरे भीतर में समाहित कविताएँ – एक खूब सूरत बेटी का पिता, बहन का प्रेमी, प्यार में डूबी हुई माँ, तुम जिसे प्रेम कर रही हो इन दिनों, जैसी कविताएँ रचकर पर्दे के संबंधों को सामने ला कर प्रेम की परम्परागत अवधारणा जो युवाओं तक सीमित थी उसे नवीन अथर्वत्ता देने का प्रयास किया है।

इतना निश्चित है कि आलोच्य कालखडं में प्रेम के उपादान या उपकरण बदल गए हैं। अब नायिका की नाक, आँख, होंठ या उरोजों का सौन्दर्य नहीं देखा जाता है। अब प्रेम का सतही स्तर उभरा है। जिसमें अव्यक्त भावनाएँ आकर्षण, उपभोग और खिलवाड़ के लिए स्पेस बना है। कवि परम्परागत उपमानों के भँवर में न उलझकर सपटबयानी में विश्वास रखते हैं। प्रेम के मोह पाश में बाँधकर देह की चाह जैसे सामयिक विषय कवियों को अपील करते हैं। भूमण्डलीकरण की आहट के बीच वेश्या जैसे शब्द भी अपनी अथर्वत्ता खो चुके हैं। इस दौर ने उन्है। कॉल गर्ल जैसी नवीन संज्ञा दे दी है। कॉल गर्ल यद्यपि एक व्यवसाय की शक्ल लेता है किन्तु कानून सम्मत नहीं होने के कारण अन्दरुनी रूप से नेट वर्क के रूप में अवै। आकार ग्रहण करता है। कॉल गर्ल पेशा अमूमन मजबूरी में अपनाया पेशा है। कई युवतियाँ मॉड लिंगया कुछ अलग करने की चाह में विज्ञापन वुल्मी दुनिया रूख करती हैं। धीरे–धीरे यह तंत्र अपने जाल में फाँस लेता है। सौन्दर्य प्रदर्शन में स्त्री देह का प्रयोग नया नहीं है इसके बीज इतिहास में भी मिल जायेंगे किन्तु अब प्रिंटव मल्टीमीडिया के माध्यम से स्त्री देह का भरपूर प्रयोग किया जाता है ताकि ग्राहक उसके रूपाकर्षण में बँधकर उन चीजों की ओर आकर्षित हो । कुछ समय के बाद उन्है। काम मिलना बन्द हो जाता है तो मंगलेश डबराल के शब्दों में – और जो पकड़ में आती है। क्या वे सचमुच कॉल गर्ल होती है। यह उनके अलावा और कोई नहीं जान सकता ऐसी साहस की पुतलियाँ अभी दिखती नहीं जो यह बेहिचक कह सकें और वे विज्ञापनी मॉडलें भूतपूर्व देहै। जो अब मुजरिम बनी हुई है। जिन्है। ढलती उम्र के कारण काम मिलना बंद हो गया है अपनी बेरोजगारी की वजहै। भी प्रकट नहीं करती है हमारी अश्लीलता उनके फोटो में ही अपनी खुराक पा लेती है । स्पष्टतः कवि की संवेदना कॉल गर्ल

की मजबूरी, विवशता और बेचारगी के साथ जुड़ी हैं। बाजार की नब्ज पकड़ते हुए कवि ने देहिक आकर्षण तक उपभोग की प्रवृत्ति पर प्रश्न चिह्न अंकित किए हैं ।

प्रेम की अंतिम परिणति विवाह बँधन में बँधना है। परंतु विवाह न होने की दशा में मन मसासे कर अन्यत्र विवाह करना होता है। पति के द्वारा अतीत में झाँकने के प्रयास और स्त्री की मनोदशा को कवि पवन करण ने मैं जानती हूँ वह मुझसे क्या जानना चाहता है में अभिव्यक्ति प्रदान की है– मैं देखती हूँ वह जो मुझसे जानना चाहता है उसे बार–बार अपनी पूछती निगाहों से वह टूकता है मगर जिस डर से कि कहीं पूछते – पूछते वह फट न जाय एकदम उसने अपनी जुबान को दाँतों के बीच कसकर दबा रखा है ठीक उसी डर से कहीं बताते – बताते मैं भी टूट न जाऊँ मैंने भी चुप्पी में अपनी पलके गढ़ा रखी हैं ।

स्पष्ट है कि विवाह पश्चात स्त्री का भी अपने पति के प्रति पूर्ण समर्पण है तभी तो उसने अपने टूटने का डर है साथ ही समुद्र की सीमाओं की भाँति उछाल है परंतु वह बाँधे भी रखना चाहती है। स्त्री देह का उपभोग कर उसे तिरस्कृत करना नया नहीं है। यह प्रवृत्ति इस कालखंड की मनोवृत्ति में भी रही है। एक अदद प्रेम की तलाश करती स्त्री को समाज हेये अभिधाओं द्वारा उपहास करता है। न सिर्फ पुरूष वर्ग बल्कि् महिला वर्ग भी उसे तिरस्कृत करने में पीछे नहीं रहता है। पवन करण की कविता छिनाल में
उस स्त्री की भावनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं । उसकी भीतरी संरचना ही ऐसी थी कि वह चाहती थी एक पुरूष जो उसे प्यार करे भरपूर रखे हरदम उसका ख्याल रहे उसके साथ उसके करीब हमशा पति हो तो बेहतर, प्रेमी हो न हो तो बस पुरुष ही है, मगर हो इस गफलत में उसने खाए लगातार ठवे पर ठवे छिनाल कहकर पुकारा गया उसके काम सम्बन्ध में महाकवि जयशंकर प्रसाद का मत आलोच्य कालखडं में भी प्रासंगिक है। जिस प्रकार कामायनी में महाकवि प्रसाद ने काम मंगल से मण्डित श्रंय, सर्ग इच्छा का परिणाम है, कहकर काम को मनुष्य व मनुष्यता के लिए आवश्यक माना है उसी प्रकार कवि कुमार अंबजु ने काम नामक कविता में काम को मानवीय सम्बन्ध का मूल आधार माना है। काम के अभाव में जीवन को जड़वत मानते हुए कवि कहते हैं– मरे बिना यह लोकिक देह और यह अलोकिक आत्मा भला किस काम की ।

सन्दर्भः–

1 पवन करण, स्त्री मेरे भीतर, पृ 52, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004
2 पवन करण, स्त्री मेरे भीतर, पृ 19, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004
3 लीलाधर जगुड़ी, खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है, पृ 39, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008
4 मंगलेश डबराल, नये युग में शत्रु, पृ 78, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013
5 पवन करण, कोट के बाजु पर बटन, पृ 107, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013
6 पवन करण, कोट के बाजु पर बटन, पृ 63, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013
7 कुमार अंबजु, अतिक्रमण, पृ 51, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)